

**भस्मीभूत** वि. (तत्.) जो भस्म हो गया हो, जलकर राख हुआ।

**भहराना** अ.क्रि. (देश.) 1. प्रज्वलित करना 2. धधकती ज्वाला होना 3. चकराकर गिर पड़ना 4. टूट कर गिर पड़ना 5. तितर-बितर हो जाना।

**भांडा** पुं. (तद्.) बरतन, बर्तन, पात्र।

**भांडागार** पुं. (तत्.) भंडार, कोश।

**भांडागारिक** पुं. (तत्.) भंडारी, भंडार-घर का स्वामी।

**भांडार** पुं. (तद्.) 1. वह स्थान जहाँ विभिन्न प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ रखी रहती हों, भंडार 2. वह स्थान जहाँ बेची जाने वाली बहुत सी वस्तुएँ इकट्ठी रहती हो stock 3. कोश, खजाना 4. बहुत अधिक मात्रा में गुण आदि का आश्रय जैसे- ज्ञान का भंडार।

**भाँग** स्त्री. (तद्.) 1. औषधि के लिए उपयोगी लंबा पौधा जिसके पत्ते नशीले होते हैं 2. भाँग की पत्तियाँ और उसका रस।

**भाँगड़ा** पुं. (देश.) पंजाब का प्रसिद्ध लोकनृत्य।

**भाँगरा** पुं. (तद्.) पानी के पास की जमीन में अधिक जमने वाला पौधा जिसे भृंगराज या भँगरा कहते हैं, भृंगराज की शाखाएँ काली, पत्ते लंबे और निकलने वाला रस काला होता है, भृंगराज के फूल सफेद पीले या काले होते हैं।

**भाँज** स्त्री. (तद्.) 1. भाँजने का भाव या क्रिया 2. भाँजने से पड़ा चिह्न।

**भाँजना** स.क्रि. (तत्.) 1. डोरी या रस्सी बटना 2. लाठी, मुगदर आदि अस्त्रों को हाथ में लेकर चारों तरफ घुमाने का अभ्यास और प्रदर्शन करना।

**भाँजी** स्त्री. (तद्.) 1. क्रोधित करने वाली बात 2. चुगलखोरी मुहा. भाँजी मारना- नुकसान पहुँचाना, काम में विघ्न डालना।

**भाँड़/भांड** पुं. (तद्.) 1. हानि, नुकसान 2. हास्य नाटक, स्वांग, गान आदि करने वाले समुदाय का व्यक्ति 3. बर्तन, पात्र, मिट्टी का पात्र।

**भाँड़ना** सं.क्रि. (देश.) 1. (चोरों की भाँति) घूम-घूम कर देखना 2. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना 3. नष्ट-भ्रष्ट करना 4. बिगाड़ना अ.क्रि. (तद्.) 1. व्यर्थ इधर उधर घूमना 2. मारा मारा फिरना।

**भाँति** अव्य. (तद्.) 1. प्रकार, तरह 2. रीति से, ढंग से।

**भाँपना** स.क्रि. (देश.) 1. चेष्टाओं आदि को देखकर किसी के भावों का अनुमान करना, ताड़ना 2. लक्षण आदि के आधार पर भावी घटनाओं का अनुमान करना।

**भा** स्त्री. (तत्.) 1. प्रकाश, रोशनी 2. दीप्ति, आभा, चमक 3. सौंदर्य, कांति 4. शोभा, छवि 5. किरण 6. बिजली।

**भाई** पुं. (तद्.) 1. भ्राता, सहोदर 2. चाचा, ताऊ, बुआ, मामा, मौसी आदि का पुत्र 3. समान देश के वासी, समान संप्रदाय के अनुयायी 4. समान आयु के अपरिचित व्यक्ति, मित्र आदि के लिए प्रयुक्त होने वाला आत्मीयतापूर्ण संबोधन।

**भाईचारा** पुं. (देश.) 1. भाई के समान परम प्रिय होने का भाव एवं व्यवहार, बंधुत्व 2. मैत्रीपूर्ण संबंध 3. पारस्परिक सौहार्द, मेलजोल का भाव।

**भाई-दूज** स्त्री. (तद्.) भ्रातृ-द्वितीया का पर्व जो कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है टि. इस दिन बहिर्ने भाइयों के दीर्घायुष्य की कामना से उन्हें 'तिलक' लगाती हैं, यम-द्वितीया, संभवतः यह दिन इसलिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने परम प्रिय भाई यम को अपने घर बुलाया था, आज भी इस दिन प्रायः बहिर्ने भाइयों को अपने घर आमंत्रित कर उनका सत्कार करती हैं।

**भाईबंद** पुं. (तद्.+तत्.) 1. एक ही वंश अथवा गोत्र के लोग 2. मित्र सहयोगी आदि।

**भाईभतीजावाद** पुं. (देश.+तत्) प्रशा. अधिकारी द्वारा अपने संबंधियों का नियम आदि की उपेक्षा करके अनुचित पक्षपात, कुनबापरस्ती, स्वजन पक्षपात। nepotism